Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारतीय ज्ञान परंपराएं, कला एवं संस्कृति मध्य प्रदेश के विशेष संदर्भ में

डॉ. सीमाबाला अवास्या*

* सहायक प्राध्यापक (हिंदी) शासकीय माधव कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – इस देश की संस्कृति ऐतिहासिक परंपरा से प्रेरित हैं। भारत का इतिहास जितना गौरवशाली है, उतनी ही हमारी संस्कृति संगठित और सुवासित हैं। हमारा देश अपनी समृद्ध परंपरा एवं सांस्कृतिक धरोहर के लिए गौरवान्वित रहा है। देश के प्रतीक राज्य की अपनी सांस्कृतिक विरासत के साथ राष्ट्र को स्थिर तथा मजबूत बनाते हैं। देश के प्रत्येक राज्य का अपना इतिहास रहा है। इसमें मध्यप्रदेश भी एक हैं। मध्यप्रदेश भारत की हृदय स्थल होने के साथ–साथ कलास्थली भी है। प्राचीन काल से ही मध्य प्रदेश की एक गौरवशाली परंपरा रही हैं। यहां की लोककला एवं लोक साहित्य अत्यंत प्रसिद्ध हैं। जीवन की संपूर्णता उनके हर्ष– विषाद, आशा– निराशा, लाभ–हानि, उत्सव– त्यौहार एवं कामकाज उनकी लोककला एवं लोक साहित्य में जीवंत हैं। प्रकृति के साथ गहराई से जुड़े होने के कारण उनके प्राकृतिक रंग रूप का सौंदर्य से पल्लवित एवं पुष्पित हुआ हैं। मध्यप्रदेश की लोक संस्कृति, भारतीय संस्कृति के मूल्य से अनुकनित होते हुए भी निशिता और विशेषता के कारण स्वतंत्र पहचान बनाए हुए हैं। पड़ोसी राज्यों की साथ सांस्कृतिक संदर्भ और कलाओं की आदान–प्रदान में प्रदेश की सांस्कृतिक विभिन्नता के साथ–साथ सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक व्यापकता को भी और बढ़ाया है। सांस्कृतिक विविधता के कारण ही मध्य प्रदेश को लघु भारत कहा जाता है और साथ ही लोक कला एवं संस्कृति धर्मिता की दृष्टि से यह बहुरंगी और बहुव्रीहि थी प्रदेश कहलाता है।

मध्य प्रदेश, देश के हृदय रूप में देश के केंद्र में स्थित है। इसी भू–भाग पर कृष्ण ने उज्जैन की संदीप आश्रम में शिक्षा पाई, तो कालिदास ने यही अनेक कालजई रचनाओं को रचा। मध्य प्रदेश अपने आंचल में एक समृद्ध संस्कृति को धारण करता है। विभिन्न चित्रकलाएं, भित्ती चित्र, लोक कलाएं, लोकगीत, लोक नृत्य आदिवासी संस्कृति से परिपूर्ण यह राज्य अपने आप में निराला है। विभिन्न दुर्ग, किलें, मकबरे, समाधिया आदि इसके गौरव में इतिहास की व्याख्या करते हैं। यहां की संस्कृति सतरंगी रंगों से सजी है। मानव जीवन की परंपरा जितनी प्राचीन है, उतना ही प्राचीन लोक साहित्य है।लोक साहित्य सर्वोदय के हृदय में सजा प्रतिभा से अद्भुत वह साहित्य है, जिसमें निरंतर अभ्यास से अंचल के माटी की भीनी भीनी सुगंधा सरत व्याप्त है। लोक साहित्य में प्राचीन संस्कृति, संस्कार, संवेदना जीवन मूल्यों के साथ–साथ हमारे पर्वत, पहाड़, वृक्ष, नदी, सरोवर, पशु– पक्षी, महिला उत्सव, पर्व त्यौहार आदि अभिव्यक्त होते हैं। स्टेट्यूट लोक साहित्य सीधे लोक नृत्य से निकलकर लोकमान्य की यात्रा करता है।

लोक साहित्य जो लोक मनोरंजन के लिए लिखा गया हो उसे लोक के लिए जो विशेष पढ़ा लिखा नहीं। वास्तव में लोक साहित्य वह मौखिक साहित्य है जिसे किसी व्यक्ति ने रचा हो पर आज से सामान्य लोग अपना ही मानता है और जिसे लोग की योग्य वाणी साधना समाहित रहती है साथ ही जिसमें लोक मानस प्रतिनिधित्व होता रहता है। सभ्यता के प्रभाव से दूर रहने वाली अपनी सहजवस्था में वर्तमान को निरक्षर जनता है उसकी आशा – निराशा, हर्ष – विषाद ,जीवन– मरण, लाभ – हानि, सुख–दुख आदि की अभिव्यंजना, जिस साहित्य में होती है उसे लोक साहित्य कहते हैं। इस प्रकार लोक साहित्य जनता का वह साहित्य है जो जनता के द्वारा जनता के लिए लिखा गया हो। इस प्रकार कहा जा सकता है कि लोक साहित्य असभ्य एवं अशिक्षित जनता का साहित्य है, जिसने उनकी लोक संस्कृति, सभ्यता एवं जीवन के विभिन्न रंग अभिव्यक्त होते हैं। मध्यप्रदेश के विभिन्न स्थानों पर विभिन्न प्रकार की कला और साहित्य लिखे गए जिनका वर्णन इस प्रकार है –

बघेलखंड की लोक कलाएं:– बघेलखंड की पारंपरिक सामाजिक और संस्कृत दृष्टि से अपनी एक अलग पहचान है। यह एक संस्कृति संपन्न अंचल कहलाता है। यहां प्रकृति का सौंदर्य देखने को मिलता है पारंपरिक सांस्कृतिक विरासत के कारण यहां की कला एवं रूपांकर कलाओं में बिता मिलती है। बघेलखंड की लोक कलाएं इस प्रकार है– खराद कला, धातु शिल्प, सुपारी शिल्प आदि।

लोक चित्र:– बघेलखंड में पारंपरिक भिति चित्र और भूमि अलंकरण बनाए जाते हैं। इस प्रक्रिया में न केवल चित्र परंपरा का नई पीढ़ी के दोहराव होता है बल्कि चित्र रंगरेखा एवं मिथक का संरक्षण भी होता है प्रमुख लोक चित्र इस **प्रकार है–** मोरइला, बरायन / दहेंगर, तिरंगा, कोहबर, छठी चित्र आदि।

लोक नृत्य:– नृत्य एक मनोहारी कला है, जिसमें गायन, वादन और अभिनय का समावेश होता है। बघेलखंड की लोक जीवन में लोक नृत्य का महत्वपूर्ण स्थान है। बघेलखंड के प्रमुख नृत्य इस प्रकार है– बिरहा नृत्य, कैमाली नृत्य, राई नृत्य, सुआ नृत्य, दादर नृत्य, कलसा नृत्य आदि।

बुंदेलखंड की लोक कलाएं:– बुंदेलखंड की धरती पर प्राय हर युग में युद्ध लड़े गए इसलिए बुंदेली लोक जनों में स्वाभाविक रूप से शौर्य और साहस विद्यमान है। बुंदेली लोक कला में भी वीर रस का समावेश देखा जा सकता है। बुंदेलखंड में बुंदेली लोकचित्र, लोक शिल्प एवं लोक नृत्य आदि लोक विधाओं का संरक्षण एवं विस्तार परिलक्षित होता है।

लोक चित्र:– बुंदेली लोकचित्र परंपरा में पर्व, त्यौहार और उत्सव से संबंधित भित्ति चित्रों एवं भूमि अलंकारों की बहुलता सर्वाधिक है। भूमि अलंकरण में चौक पूजने का रिवाज प्रत्येक अवसर पर दिखाई देता है। बुंदेलखंड में प्रचलित लोकचित्रों में नौरता (सुअटा) आता प्रमुख है, जो प्राय: खुशी एवं त्योहार के अवसर पर बनाए जाते हैं। बुंदेली लोकचित्र के जातिगत प्रतीक बम और अर्थ की गहराई के कारण लोकचित्र परंपरा के अर्थ राशि पूर्ण है बुंदेलखंड के प्रमुख लोकचित्र इस प्रकार है:– सुरती, नौरता, मामुलिया, मोरइला, बरायन,/अगरोहन, मारते, सांझाफुली।

लोक कला:– लोक कला का अभ्युदय साहित्य के साथी माना गया है। बुंदेलखंड में लोककला का एक रूप दैविक संकेत तथा परंपरागत विश्वास पर आधारित है तथा दूसरा सामाजिक रीति रिवाज पर आधारित है। बुंदेली लोककला प्रतीकात्मक रूप में विद्यमान है, जिसका सरलतापूर्वक चित्रण होता है। विभिन्न शिल्प कलाओं में परंपरागत रूप से काम करने वालों की समाज में जातिगत पहचान है।

बुंदेलखंड की प्रमुख लोककलाएं इस प्रकार है– गुड़िया शिल्प

लोकनृत्य:– बुंदेलखंड में प्राचीन एवं पारंपरिक व्यक्तियों का प्रचलन है। नदियों का लोक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। इस अंचल में कई आकर्षक नृत्य विद्यमान है। धार्मिक, पौराणिक और सामाजिक कथा को पर आधारित अत्यंत लोकप्रिय है। बुंदेलखंड में सर्वाधिक प्रचलित राई नृत्य जनप्रिय है, जो प्राय: खुशी के अवसर पर प्रदर्शित किया जाता है। यह अत्यंत प्राचीन नृत्य विधा है। लोग जीवन को सरस एवं मनोरंजन के उद्देश्य से मृत्यु का आयोजन किया जाता है। बुंदेलखंड के विभिन्न प्रकार के नृत्य प्रस्तुत हैं – जैसे कानड़ा नृत्य, सैरा नृत्य, ढिमरयाई नृत्य, अखाड़ा नृत्य, ज्वारा नृत्य, बधाई नृत्य, राई (बेड़नी) नृत्य, आदि।

मालवी लोककलाएं:– मध्य प्रदेश के अंचलों में मालवा अपनी विशेषताओं के कारण दो प्रसिद्ध है प्राचीन काल से मालवा में लोक कलाओं की समृद्ध परंपरा रही है वस्तुत: कला समाज के लिए होती है इसलिए कल में नवजीवन साधानों का उपयोग अत्यधिक आवश्यक है मालवी लोग जीवन के माधुर्य और सौंदर्य की कलात्मक अभिव्यक्ति मालवी लोक क्षेत्र में अत्यंत सशक्त है पहले जो चित्रकला मृत्यु पर व्याप्त थी वह धीरे–धीरे पुस्तकों में समाहित होती चली गई मालवा में दो तरह की लोक चित्र परंपरा है सांस्कृतिक लोक चित्र जो पर्व त्यौहार व्रत और उत्सव आदि अवसरों पर विशेष रूप से बनाए जाते हैं धार्मिक चित्र व्रत उत्सव और त्योहार के लिए बनाए जाते हैं।

लोक चित्र:– इन लोग चित्रों में हरियाली अमावस्या पर दिलासा, नागपंचमी पर नागचित्र, जन्माष्टमी पर कृष्ण जन्म के भित्ति चित्र, श्राद्ध पक्ष में संजा, नवरात्रि में नवरत, दशहरे पर भूमि चित्र, दीपावली पर गेरू खड़िया के हाथे (हथेली चित्र) , जन्मोत्सव पर पगल्या, विवाह में गंगा पूजन का भित्ति चित्र आदि उल्लेखनीय है, परंतु इसमें भी संदेह नहीं की जैसी चित्रकला की मनोवृत्ति होगी चित्र भी वैसा ही होगा मालवा की सीमा में शेर चित्र भीमबेटका में विविध रूप से प्राप्त होते हैं बाग गुफाओं में चित्रों की जो श्रृंखला प्राप्त होती है वह मालवा की समृद्धि चित्रकला परंपरा का परिणाम है धार्मिक लोक चित्रों में नारियल की नरेटी को खड़िया मिट्टी के रंग में डुबोकर नगर ग्राम के मिट्टी के घर या देवालयों में चित्रांकन किया जाता है जैसे की गंगा पूजन देवउठनी ग्यारस विवाह तीर्थ यात्रा टोना टोटका अथवा अन्य लोक अनुष्ठान का यह तो चित्र अंकन किया जाता है यह चित्र बहुदा धार्मिक होते हैं माल उज्जैन मालवा शैली का केंद्र रहा है उज्जैन में चित्रों की पूरी चित्रवादी की थी और चित्र अवार्ड की समृद्ध परंपरा थी यही कारण है की चित्र वर्णन में मालवी और राजस्थानी शैली का सम्मिश्न है मालवा की लोक चित्र परंपरा को गृह स्वामी की आकांक्षा तथा चित्रों ने कल को सतत बनाए रखा है परमार कल को चित्र का कला की दृष्टि से मालवा का स्वर्ण काल माना जा सकता है लोक चित्रकला पूर्ण एवं लोकप्रिय रहिए।

लोक शिल्प:– मालवा में पारंपरिक शिल्प में विविध के साथ प्राचीनता सहज रूप में दिखाई देती है जैसे मिट्टी शिल्प में कुम्हार के द्वारा बनाए जाने वाले मटके बर्तन दिए मूर्तियां गुलदस्ते आदि प्रमुख है कंगी कला में अनेक प्रकार की कंगियों का प्राचीन काल से ही प्रचलन रहा चला आ रहा है इन कंगियों में घढाई के सुंदर काम के साथ ही रतन की लड़ाई मीनाकारी और अनेक उपकरणों द्वारा उनका अलंकरण किया जाता है गंजी बनाने का श्रेय बंजारा जनजाति को है पता शिल्प की कलाकार मूलत: झाड़ू बनाने वाले होते हैं जिसे पेड़ पत्तों से कलात्मक खिलौने चटाई आसान दूल्हा–दुल्हन के मोड आदि बनाए जाते हैं लाख शिल्प के अंतर्गत वृक्ष के गोंद या रस से लाख बनाई जाती है लाख का काम करने वाली जाति को ही लखारा कहा जाता है उज्जैन का छिप शिल्प भी भेरूगढ़ के नाम से देश एवं विदेश में विख्यात है।

लोकनृत्य:– मालवा में पारंपरिक लोक नृत्य भी प्रस्तुति थे यह नृत्य अपनी विशिष्ठाओं को अपने आप में समाहित किए हुए हैं मालवा के प्रमुख लोक नृत्य इस प्रकार है मटकी नृत्य, आडा खड़ा नृत्य, रजवाड़ी नृत्य, अंट्या नृत्य आदि।

निमाड़ी लोक कला:– मालवा के दक्षिण में विंध्य और सतपुड़ा के मध्य नर्मदा नदी के उत्तर धार में और दक्षिण में बड़वानी को लेकर पूर्व तक विस्तृत रूप से फैला हुआ क्षेत्र निर्माण है इसे हम मालवा का ही एक विशिष्ट विभाग कर सकते हैं निर्माण की लोक कलाओं की प्राचीन एवं समृद्ध परंपरा देखने को मिलती है जो इस प्रकार है–

लोक चित्र –निमाड़ में लोक चित्र विद अवसर पर बनाए जाते हैं जैसे थापा, खोपड़ी पूजा, ईरत, पगल्या, कंचलई भरना, फिरौती।

लोक शिल्प:– निमाड़ में लोक शिल्प के अंतर्गत दो प्रकार मिलते हैं पीतल शिल्प से कारात्मक वस्तुएं बनाई जाती है यहां प्रमुख रूप से बनकर बर्तन बनाए जाते हैं कास्ट सिर्फ के अंतर्गत लकड़ी की विभिन्न कलात्मक सामग्रियों के निर्माण की परंपरा आदिम युग से चली आ रही है धार झाबुआ निमाड़ में प्रमुख रूप से भील जनजाति लोक कला का निर्माण किया जाता है। लोक नृत्य निमाड़ी लोक जीवन में नृत्य का महत्वपूर्ण स्थान है यहां की प्रमुख लोक नृत्य प्रकार है गणगौर, आडा खड़ा नाच, डंडा नाच, काठी नाच, फेफारिया नाच, मांड्या नाच आदि।

अनुसूचित जनजाति की लोक कलाएं:– जनजाति मानव समाज का वह वर्ग है जो आज के इस सभ्य समाज में भी मानव के आदिकाल को चित्रित करता है अनुसूचित जनजाति भारतीय संविधान के अंतर्गत प्रयोग की गई एक संवैधानिक शब्दावली आदि जनजातियों को अनुचित करने का पहला प्रयास 1931 के जनगणना में किया गया यह अनुसूचित जनजाति निश्चित विभाग में निवास करती है जिनकी एक सामान्य संस्कृत होती है मध्य प्रदेश में अनुसूचित जनजातियों की संख्या 46% थी मुख्य रूप से गोंड, भील, बैगा, सहरिया, भारिया, कोरकू, बंजारा, अगरि, कोल, पनिका, पारधी इत्यादि जनजातीय हैं मध्य प्रदेश की अनुसूचित जनजाति की लोक कलाओं में विशेष रूप से लोग चित्र लोक नृत्य एवं शिल्प को लिया गया है।

लोक नृत्य:– सैलाब,करमा, भड़ओनई, बिरछा,कहलवा, सजनी सुआ, दिवानी, परधौनी, फाग, भगोरिया, भड़म, सैतम डोहा, बढ़ावा, गौरी, ठआंढल, थापरी, भोग्र्या, राठ्या गैर, नपाई गरबा आदि। टोकरिया बना तथा जड़ी बूटियां का संगठन करना इनका प्रमुख पैसा है

लोकगीत:– लोकगीत न पुराना होता है ना नया वह तो जंगल की एक वृक्ष के समान है जिसकी जेड तो दूर जमीन में भूतकाल दासी हुई है परंतु जिसने निरंतर नहीं दलिया पल्लव और फल फूलते रहे हैं वस्तु तथा लोकगीत लोक मानस की स्वाभाविक अधिकार है लोकगीतों में लोकमाता की सुगंध व्याप्त है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. मालवी भाषा और साहित्य – मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी।
2. हिंदी भाषा और संवेदना – मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी।
3. मध्य प्रदेश सामान्य ज्ञान – जबर सिंह परमार।
4. नैतिक मूल्य हिंदी भाषा – नैतिक मूल्य और भाषा।
5. हिंदी निबंध – आनंद प्रकाशन ग्वालियर।

****